Vol. 9, Issue-2 (July 2020) pp.1-2 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

सम्पादकीय:

कोरोना संकट काल में संगीत

वर्ष 2020 के शुरुआत होते ही कोरोना ने भारत में दस्तक दे दी थी. भारत में किसी को अंदाजा नही था कि हालात धीरे - धीरे बद से बदतर होते जाएँगे. कोरोना से बचने और सबको बचाने के लिए 24 मार्च 2020 से पूरे देश में लॉकडाउन घोषित कर दिया गया. लोग अपने अपने घरों में कैद हो गए. कोरोना काल ने जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया. संगीत की शिक्षा, उसके कार्यक्रम, मंच प्रदर्शन, उससे जुड़े रोज़गार भी व्यापक रूप से प्रभावित हुए.

संगीत शिक्षा के सन्दर्भ में बात करें - वर्तमान में कोरोना काल की परिस्थितियों में जिस प्रकार तकनीकी माध्यमों से संगीत शिक्षा दी जा रही है या इसकी शिक्षा देने पर जोर दिया जा रहा है, उसको देखते हुए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कोरोना काल के बाद संगीत के अद्ध्यायन - अद्ध्यापन और संगीत सीखने के तौर-तरीकों में जबरदस्त बदलाव आने वाला है. यह बदलाव ICT यानी Information Communication & Technology के माध्यम से होगा. संगीत की शिक्षा, उसके प्रदर्शन, उसके प्रचार – प्रसार को इस ICT ने विभिन्न काल खण्डों में व्यापक रूप से प्रभावित किया है. Gramophone से लेकर Advance Microphone तक, Cassette/CD/DVD से लेकर YouTube तक या Digital होते Music Instrument से Mobile App तक इसके प्रभाव को क्रमिक रूप से देखा और समझा जा सकता है. यहाँ एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ कि ICT के माध्यम से दी जाने वाली संगीत शिक्षा के सामने कई सारी चुनौतियां है, लेकिन समय के साथ नई Technology आने से उनका समाधान होता रहेगा.

जैसा कि हम सब जानते है कि संगीत एक प्रदर्शनकारी कला है. लॉक डाउन के बाद से Social Distancing के चलते इसके कार्यक्रमों पर पूरी तरह से पाबंदियां लग गई. लॉक डाउन ने समाज को स्थिर कर दिया लेकिन Digital Platforms पर कलाकार अधिक सक्रीय हो गए. हर- छोटा बड़ा कलाकार face book live होकर प्रोग्राम देने लगा. कोरोना संकट की घड़ी में संगीतकारों की सक्रियता को सलाम करना चाहिए. इन कलाकारों ने Digital गाना- बजाना करके ऐसे संकट के समय में समाज का तनाव दूर किया, लेकिन गौरतलब बात यह है कि digital गाने- बजाने से रोटी का इंतजाम नही होता. आज छोटा कलाकार हासिए पर है. समाज की गतिशीलता रोजगार की नई- नई संभावनाओं को जन्म देती रहती है. समाज का स्थिर हो जाना संगीत और संगीतकारों के लिए बहुत ख़तरनाक साबित हुआ है.

इस संकट को एक और दृष्टि से देख सकते है. पिछले 6 वर्षों से विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में नियुक्तियों की स्तिथि क्या है? इस बात से हम सब वाकिफ है. संगीत में स्तिथि वैसे भी पहले से अच्छी नहीं थी लेकिन विगत 6 वर्षों में यह और गर्त में चली गई है. लेकिन मजेदार बात यह है कि नेट की परीक्षा साल में दो बार बा-दस्तूर जारी है. हर साल एक बड़ी संख्या में संगीत के विद्यार्थी PhD की डिग्री लेकर निकल रहे है. उनका क्या होगा? इसका जवाब किसी के पास नही है. पिछले कई सालों से संगीत का विद्यार्थी PhD की डिग्री लेकर, NET/JRF की परीक्षा पास करके, तमाम तरह के प्रकाशनों का गट्ठर तैयार करके, रेडियो का ग्रेड लेकर नौकरी की राह देखते - देखते थक चुका है. बहुत से अच्छे कलाकार और जानकार कलाकार कोरोना संकट से पहले Tuition और छोटे मोटे program के सहारे जीवन

बिता रहे थे. लेकिन कोरोना संकट के चलते Lockdown और Social Distancing ने उनकी स्तिथि को बद से बद्तर कर दिया है.

मेरा व्यक्तिगत रूप से मनाना है आज का संगीत पहले की तुलना में अधिक मजबूत स्तिथि है. आज का संगीत लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है. अपने अधिकारों के लिए लड़ सकता है. अपने हक़ के लिए लड़ने का अधिकार संगीत और संगीतकारों को कभी भी नहीं मिला क्योंकि वह हमेशा मंदिरों के आश्रय में, दरबारी राजश्रय में और उसके बाद कोठों के आश्रय में रहा और आश्रय में पलने वालों के अधिकार नही होते. आज संगीत और संगीतकार लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत अपने अस्तित्व को बचाने के लिए, अपने लिए नीति बनवाने के लिए सरकार पर दबाव डालना चाहिए. जापान में Cultural Property Protection Law है. जिसके अंतर्गत जापान की किसी भी स्थानीय कला, संस्कृति, संगीत आदि को संरक्षण देते हुए उसके कलाकारों को रोज़गार उपलब्ध कराना वहां की सरकार की जिम्मेदारी है. भारत की सांस्कृतिक विविधता विराट है. यहाँ की कलाएं और संगीत पूरी दुनिया का मन मोहती है. लेकिन इसके संरक्षण को लेकर सरकार व समाज में उतनी उदारता नही दिखती, जितनी की आवश्यकता है. नीतियाँ तो है लेकिन नियत में अनमनापन है. कुछ भी हो लेकिन सभी को मिलकर इस कोरोना काल में संगीत और संगीतकार को बचाने का प्रयास करना होगा नही तो समाज का तनाव और अवसाद दूर करने वाला संगीतकार खुद तनाव और अवसाद का शिकार होने लगेगा.

धन्यवाद